- खेल – गांव की मिट्टी से राजधानी तक...
- व्यंग्य– ये अंदर की बात है...
- महिला दिवस :– हक के लिए जागरूकता
- लघुकथा : पीछे छूटता हुआ गांव
- गुड़ी के गोठ : आदि परब के अद्भुत रंग
- आंखन देखी दुनिया : अज्ञान रोकना विकास की राह

छत्तीसगढ़

www.dailychhattisgarh.com

डाक पंजीयन क्र. छग /रायपुर संभाग /40 /2009–2011

रायपुर, 14 मार्च 2010, रविवार | वर्ष-3 अंक-12 पृष्ठ- 12 दाम- 2 रुपए | चैत्र बदी १४ सं. २०६६

साइकिल पर आना चाहते हैं कई सांसद

नई दिल्ली, 14 मार्च (एशियन एज)। ग्लोबल वार्मिंग को लेकर चिंतित कुछ सांसदों ने साइकिलों से संसद आने के विकल्प पर गंभीरता से विचार करना शुरू कर दिया है। दो युवा सांसदों बीजद के मेहताब भातृहरि और कॉंग्रेस के संदीप दीक्षित ने लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार से मिलकर साइकिल से संसद में आने की अनुमति मांगी है।

इन सांसदों ने गत मंगलवार को ही साइकिल पर संसद में आने की कोशिश की थी, लेकिन सुरक्षा कारणों से उनको अंदर आने से रोक दिया गया। संसद के गेट पर ही सुरक्षाकर्मियों ने उनको रोक दिया, क्योंकि बिना ईंधन के चलने वाली उनकी साइकिलों पर वैध पास नहीं लगे थे। इस समस्या के बाद सांसदों ने लोकसभा अध्यक्ष से मिलकर उनकी मदद लेने की कोशिश की। मामले की गंभीरता को देखते हुए लोकसभा अध्यक्ष ने लोकसभा के सिक्योरिटी जनरल को तुरंत निर्देश जारी कर जरूरी इंतजाम करने को कहा है। मीरा कुमार का कहना है कि अगर कोई सांसद अपनी साइकिल से लोकसभा में आना चाहता है, तो उसे इसकी अनुमति मिलनी चाहिए। सांसदों ने लोकसभा अध्यक्ष से दो मांग की हैं।

(बाकी पेज 8 पर)

सम्पादकीय पेज 6 पर

साइकिल सिर्फ एक प्रतीक

रायपुर में कल शुरू हुए जगार में लोक कलाकारों की एक पीढ़ी की सज्जा करती हुई पिछली पीढ़ी की महिला। छाया / छत्तीसगढ़

आंध्र में 14 हजार आदिवासी किशोरियों पर गर्भाशय कैंसर टीका–परीक्षण, 3 मौतें

खम्मन, 14 मार्च (डेकन क्रानिकल)। गर्भाशय के कैंसर की महंगी दवा के आन्ध्र और गुजरात की 14 हजार किशोरियों पर हो रहे परीक्षण के अंतिम दौर में आन्ध्र प्रदेश के खम्मन में तीन किशोरियों की मौत से आदिवासी समुदाय में खलबली मच गई है।

आदिवासी छात्रावासों में रह रही किशोरियों पर इन दवाओं के परीक्षण का विरोध कर रहे संगठनों ने स्वास्थ्य मंत्रालय पर लड़कियों के प्रति उपेक्षा बरतने का आरोप लगाया है, जबकि खम्मन में इस कार्यक्रम की अगुवाई कर रहे अधिकारी ने कहा है कि यह मौतें आत्महत्या के कारण हुई हैं।

आंध्रप्रदेश के इस इलाके में आदिवासी लड़कियों के कम उम्र में सेक्स में सक्रिय होने, और कभी–कभार आत्महत्या कर लेने की घटनाएं होती हैं, लेकिन इन लड़कियों के माता–पिताओं ने आत्महत्याओं के किसी भी कारण की मौजूदगी से इंकार किया है।

उल्लेखनीय है कि गर्भाशय के कैंसर का यह टीका 9 हजार रुपये का है। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के सूत्रों के मुताबिक इस टीके के सार्वजनिक टीकाकरण कार्यक्रम में शामिल किए जाने की कोई सम्भावना नहीं है। लेकिन बिल और मिलिंडा गेट्स

(बाकी पेज 8 पर)

दमोह में खसरे के टीके ने ली चार बच्चों की जान

दमोह, 14 मार्च (एनडीटीवी)। मध्यप्रदेश के दमोह जिले में खसरे के टीके से चार बच्चों की मौत हो गई है। यहां के आंगनबाड़ी केंद्र में 15 बच्चों को खसरे का टीका लगाया गया। जिसमें चार की मौत हो गई है जबकि पांच बच्चों की हालत गंभीर बनी हुई है। इस मामले में एक अधिकारी और एक कर्मचारी को निलंबित किया गया है।

रजनी विश्वकर्मा भी अपने 9 महीने के बच्चे को आंगनवाड़ी केंद्र से खसरे का टीका लगवाने आई थी। मुन्ना के घर में 15 साल बाद किलकारी गूंजी थी। अभी बेटी ने साल भी पूरा नहीं किया था कि खसरे के टीके ने उसकी जान ले ली।

दमोह के सीएमएचओ एके श्रीवास्तव का कहना है कि फिलहाल प्रशासन ने पूरे इलाके में सप्लाई हुए टीके पर प्रतिबंध लगा दिया है। और जांच के आदेश दे दिए हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि खसरे के टीके को एक निर्धारित तापमान पर रखा जाता है। अगर तापमान बढ़ जाए तो ये टीका जहर बन जाता है। फिलहाल सवाल ये है कि इस सरकारी लापरवाही का खामियाजा कौन भुगतेगा।

इस संबंध में रायपुर के शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. सांवर अग्रवाल कहते हैं कि टीकाकरण का यह कार्यक्रम राष्ट्रीय महत्व का है बिना जांच–पड़ताल कुछ कहना गलत होगा। वे कहते हैं कि वॉयल के एक्सपायरी होने या गलत तापमान में रखने के कारण भी यह जहरीला नहीं होता, असर कम हो सकता है। सामान्यत: इसका वॉयल 2 से 8 डिग्री तापमान पर रखा जाता है।

निजी बिजली कंपनियों ने सरकार को अरबों का चूना लगाने का तरीका ईजाद किया

छत्तीसगढ़ संवाददाता

रायपुर, 14 मार्च। राज्य में बिजली की खरीद–बिक्री में करोड़ों–अरबों के गोलमाल का खुलासा उस समय हुआ जब बिजली कंपनी ने दर तय करने के लिए नियामक आयोग को आवेदन किया। मुख्य अभियंता (वाणिज्य) ने आयोग को भेजे पत्र में कहा है कि पीक और ऑफ पीक अवर में खरीदी के लिए अलग–अलग दर होने से निजी बिजली निर्माता कंपनी इसका फायदा उठा रहे हैं। वाणिज्य अफसरों का कहना है कि निजी लोगों से बिजली खरीद की दर एक समान हो और समझौते से 10 फीसदी से अधिक बिजली नहीं देने की बाध्यता होनी चाहिए।

दरअसल, निजी निर्माता ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए पीक अवर में उत्पादन करते हैं और इस दौरान समझौते से कई गुना अधिक बिजली देते हैं। जरूरत से अधिक बिजली का उपयोग नहीं हो पाता। इस तरह बिजली कंपनी करोड़ों की बिजली खरीद कर भी इसका उपयोग नहीं कर पाती। ऐसी बिजली को ग्रिड में डाल दी जाती है। इसके बदले बिजली कंपनी को कुछ भी राशि नहीं मिलती। जबकि निजी कंपनी इसका पैसा वसूल लेते हैं। आयोग को बताया गया है कि बीते साल बिजली खरीद–बिक्री के हिसाब–किताब में यह बात सामने आई है कि राज्य ने महंगी बिजली खरीदकर करोड़ों–अरबों का नुकसान उठाया है। कई बार 3 रूपए 9 पैसे की बिजली को 2 रूपए 50 पैसे में बेचकर भरपाई करनी पड़ी है।

उल्लेखनीय है कि पिछले साल राज्य के कैप्टिव पावर प्लांट और निजी बिजली निर्माताओं से पीक लोड अवर में 3 रूपए 9 पैसे तथा ऑफ पीक अवर में 2 रूपए 98 पैसे की दर से बिजली खरीदने का समझौता हुआ था। इस समझौते में जिंदल की दो संस्थाओं से 120 और 150 मेगावाट तथा बाल्को से 100 मेगावाट बिजली खरीदने का समझौता हुआ था। इसी तरह बिजली बोर्ड (अब कंपनी) ने करीब आधा दर्जन निजी कंपनियों से खरीद के लिए पीपीए किया था। इन दोनों कंपनियों के अलावा सभी ने राज्य को करोड़ों का चूना लगाया है।

(बाकी पेज 8 पर)

अपनी टीम का मैच देखने क्यों नहीं आए शाहरुख

मुंबई, 14 मार्च (मिड डे)। कोलकाता नाइट राइडर्स ने शाहरुख खान की मौजूदगी में आईपीएल 3 का अपना पहला मैच जीता। इस बात की संभावना भी व्यक्त की जा रही है कि किंग खान अपनी टीम के बाकी मैच भी स्टेडियम की बजाय टीवी स्क्रीन पर देखेंगे। मैच के दौरान जब शाहरुख कहीं नहीं दिखे तो लोग भी हैरान रह गए, लेकिन उनकी यही गैरमौजूदगी टीम के लिए भाग्यशाली साबित हुई और टीम ने कांटे के मुकाबले में हारता हुआ मैच जीत लिया।

शाहरुख ने पूरा मैच अपने कुछ करीबी दोस्तों के साथ अपने घर मन्नत में तैयार किए गए नए होमथियेटर में देखा। सूत्रों का कहना है कि अपनी टीम को लेकर शाहरुख बहुत ज्यादा संवेदनशील हैं। इसलिए यह बात तो संभव ही नहीं है कि शाहरुख मैच की खुशी बांटने से बच रहे हों। पिछले साल आईपीएल के सभी मैचों में शाहरुख टीम के साथ में थे। इसी दौरान कुछ मुद्दों को लेकर विवाद भी हो गया था। इस बार मैच के दौरान शाहरुख किसी भी तरह के विवाद से बचना चाहते हैं। वह चाहते हैं कि खिलाड़ी किसी बखेड़े से दूर रहकर सिर्फ अपने खेल पर ही पूरा ध्यान दें।

लोगों से चर्चा के दौरान यह बात भी शाहरुख की समझ में आई है कि उनकी स्टेडियम में मौजूदगी से टीम के खिलाड़ी कुछ दबाव में आ जाते हैं। यही वजह थी कि मैच के दौरान अलग रहना ही उन्होंने ठीक समझा। शाहरुख ने बताया कि शाम को चार बजे तक वह टीम के सदस्यों के साथ थे। चूंकि पहला मैच हर टीम के लिए अहम होता है, और वह तय नहीं कर

(बाकी पेज 8 पर)

बस्तर से आए हुए लोकनृत्य समूहों के वाद्ययंत्र कई किस्म की तस्वीरें पेश करते हैं। चमड़े से मढ़ा और चमड़े से कसा यह आदिवासी–ढोल लहूलुहान बस्तर की तरह की ही एक जटिलता पेश करता है। छाया / छत्तीसगढ़

वेदांत ने कानून तोड़ा– जयराम रमेश

नितिन सेठी

नई दिल्ली, 14 मार्च (टाईम्स ऑफ इंडिया)। स्टरलाइट–वेदांत ग्रुप के साथ मिलकर उड़ीसा खनिज निगम द्वारा लांजीगढ़ की बॉक्साइट की खदानों के दोहन का कार्यक्रम एक बड़े विवाद में फंसता नजर आ रहा है क्योंकि केन्द्रीय पर्यावरण व वन मंत्रालय ने इस परियोजना के कारण वहां के आदिम जनजाति और वनवासियों के अधिकारों के हनन संबंधी गंभीर सवाल उठाए हैं। खदानों की मंजूरी से सुप्रीम कोर्ट द्वारा वन कानूनों के अंतर्गत निर्धारित नियम व शर्तों का भी उल्लंघन माना जा रहा है।

मंत्रालय ने परामर्श समिति की इस संबंध में वह रिपोर्ट मंजूर कर ली है। इसके पहले रिपोर्ट और उसमें उल्लेखित आवश्यक कदमों की सिफारिशों पर विचार–विमर्श किया। रिपोर्ट को वन विभाग के अधिकारियों और सेंटर फॉर स्टडी ऑफ डेव्हलपिंग सोसाइटी की विधि विशेषज्ञ ऊषा रामानाथन द्वारा स्थल का निरीक्षण करने के बाद पेश किया।

वन अधिकारियों ने वन और उसके संरक्षण से संबंधित कानूनों तथा पर्यावरण को होने वाले नुकसान तथा सुश्री रामानाथन ने इस परियोजना

(बाकी पेज 11 पर)

ब्रिटिश सरकार ने उड़ीसा में वेदांत को दोषी पाया

लंदन, 14 मार्च (एजेंसी)। वेदांता रिसोर्सेस पीएलसी ब्रिटिश सरकार की ओर से उड़ीसा में उसके द्वारा किए जा रहे बाक्साइट उत्खनन की जांच की आलोचना की है कि जिसके आधार पर सरकार ने वेदांता को खराब व्यवहार का दोषी करार दिया है। कंपनी ने सरकार की जांच के निष्कर्ष को एकतरफा भी बताया है।

(पूरा समाचार पेज 11 पर)

बाल यौन शोषक पादरियों पर पोप मेहरबान

बर्लिन, 14 मार्च (न्यूयार्क टाईम्स)। 16 वे पोप बेनेडिक्ट पर यूरोप में चर्च में बच्चों के यौन शोषण की शिकायतों की जांच में गंभीर गलतियां करने के आरोप लग रहे हैं। जर्मनी में चर्च के एक वरिष्ठ अधिकारी ने एक पत्र वार्ता में माना कि जर्मनी में आर्क बिशप के रूप में पोप बेनेडिक्ट ने एक पादरी द्वारा बच्चों के यौन शोषण के एक मामले की जांच में गम्भीर लापरवाही बरती।

यूरोप और अमरीका के गिरिजाघरों में पादरियों द्वारा बच्चों के यौन शोषण की बहुत सी शिकायतें सामने आ रही हैं। जर्मनी में जहां पोप आर्क बिशप थे वहां के अखबारों में रोज ऐसी खबरें छप रही हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि इन शिकायतों की आंच सीधे पोप तक पहुंचेगी क्योंकि 2005 में 16 वें पोप बनने के पहले, चार साल तक उनकी अगुवाई में ही

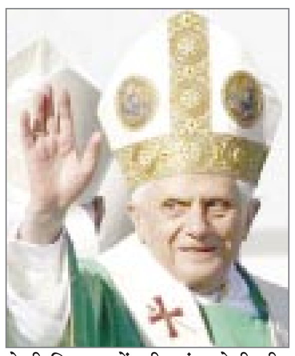

ऐसी शिकायतों की जांच होती थी।

गिरिजाघरों में बच्चों के यौन शोषण की तरफ ध्यान आकर्षित करने वाले, वाशिंगटन में वेटिकन दूतावास के एक रेव्रेंड फादर थामस डोयाल ने कहा है कि इस बात की सम्भावना नहीं है कि पोप को इन मामलों की हकीकत की खबर न हो, क्योंकि वह सूक्ष्म प्रबन्धन में माहिर हैं, और छोटी से छोटी बात की खबर रखते रहे हैं।

(बाकी पेज 8 पर)

खतरे में सुंदरवन : इंसान और भगवान सबके हमले

वे घंटों का कत्ल कर चुके हैं और तारीखों को भूल चुके हैं...जंगल जो इतना घना है कि इतिहास ने शायद ही कभी इसमें रास्ता खोजा है। सुंदरवन: यह उन्हें लील लेता है।

'द मिडनाइट्स चिल्ड्रेन ' के नाम से सलीम सिनाई की कहानी लिख कर 1981 में बुकर पुरस्कार पाने वाले सलमान रश्दी अब शायद सुंदरवन का ऐसा उल्लेख नहीं कर पाएं। कल तक दुनिया भर में अपने मैनग्रोव फारेस्ट के लिए मशहूर सुंदरवन को धरती का तापमान निगल रहा है। पिछले तीन दशकों में सुंदरबन की नदियों और बैकवाटर का तापमान प्रति दशक 0.5 डिग्री सेंटीग्रेड की दर से बढ़ रहा है। तापमान बढ़ने की यह दर औसत तापमान वृद्धि से आठ गुना ज्यादा है। धरती और जंगल के साथ–साथ पानी का तापमान बढ़ रहा है, बाघों और मनुष्य के बीच टकराव बढ़ रहा है और बढ़ रहा है सुंदरवन के हमेशा–हमेशा के लिये खत्म हो जाने का खतरा।

पानी का तापमान बढने से सुंदरवन के पानी में घुलनशील ओ2 की मात्रा बढ़ रही है। मछलियां और अन्य पशु पानी में बढ़ते ऑक्सीजन की मात्रा को बर्दाश्त नहीं कर सकते। इससे पशुओं की प्रजनन क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है और एक तरह से इनके नष्ट होने की आशंका गहराने लगी है।

सुंदरवन (प.बंगाल) से लौटकर गीताश्री

उजड़ रहा है मैनग्रोव जंगल

सुंदरबन को 'कुबेर का खजाना' कह सकते हैं मगर यहां के बाशिंदे बेहद गरीब हैं। हर साल इको–टूरिज्म का मजा लूटने हजारों देशी–विदेशी पर्यटक सुंदरबन आते हैं। सुंदरबन में हजारों लोग मछली मारने के धंधे से जुड़े हैं और बड़े पैमाने पर मछली का कारोबार करते हैं। सुंदरबन के जंगलों से स्थानीय निवासी लगभग 10 हजार टन शहद निकालते हैं। इसके अलावा स्थानीय लोग अन्य वनोपज की मदद से भी अपना जीवन यापन करते हैं। इसके अलावा यहां पेड़–पौधों और वन्यजीवों की हजारों प्रजातियां पाई जाती हैं।

सुंदरबन का मैनग्रोव जंगल तेजी से सिकुड़ रहा है। सुंदरवन में पेड़ पौधों की कटाई का पुराना इतिहास रहा है. एक अनुमान के अनुसार हर साल दो लाख टन लकड़ी सुंदरबन से कोलकाता और 24 परगना जाता है। ये और बात है कि यहां संरक्षित वन होने की वजह से पेड़ो की कटाई अवैध है। सुंदरबन के विशेषज्ञ कुमुद रंजन नास्कर के अनुसार आबादी बसाने के नाम पर पिछले एक सौ साल में 2000 वर्ग किलोमीटर जंगल का सफाया हुआ है। सुंदरवन के लगभग 54 द्वीपों पर नहीं के बराबर पेड़–पौधे हैं। ऐसे में इतनी बड़ी संख्या में पेड़ों का काटा जाना भी संदरबन के हक में नहीं है। (बाकी पेज 5 पर)

मिजो चर्च की समलैंगिकों को निकालने की धमकी

एजवाल, 14 मार्च (टाईम्स ऑफ इंडिया)। एक तरफ तो समलैंगिकों के प्रति पूरे भारत में रवैया नरम पड़ता जा रहा है परंतु दूसरी तरफ मिजोरम

के चर्च में समलैंगिकों को समाज से बहिष्कृत करने की धमकी देकर नया विवाद खड़ा कर दिया है।

शनिवार को बैप्टीस्ट चर्च ऑफ मिजोरम ने कहा है कि उनके अनुयायियों में समलैंगिकता को कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। दोषियों को कड़ी सजा दी जाएगी जिसमें उन्हें समाज से बहिष्कृत किया जाना भी शामिल है। बीसीएम, जो पूरे मिजोरम में प्रेसबाइटेरियन चर्च के बाद सबसे ताकतवर संस्था मानी जाती है, के अनुसार समलैंगिकता गैर कानूनी है। एजवाल से 300 किमी दूर दक्षिण मिजोरम के लांगतलई के बीसीएम बाजार चर्च में हुई इस सभा में 900 धर्मगुरू एकत्र हुए थे। इसकी अध्यक्षता फादर सी. रोथुआमा ने की थी। बीसीएम की मार्गदर्शिका के अनुसार समलैंगिकता, गर्भपात और परिवार नियोजन मिजोरम में पूरी तरह निषिध हैं। हालांकि महिला की जान बचाने के लिए आपात स्थिति में चिकित्सकीय तरीके से गर्भपात कराए जाने में कोई आपत्ति नहीं है।

चर्च और समलैंगिकता के समर्थकों के बीच विवाद पिछले वर्ष

(बाकी पेज 8 पर)